



भा.वा.अ.शि.प. वानिकी समाचार

वर्ष 10 अंक 4

अनुक्रमणिका

पृ.सं.	शीर्षक
01 ➔	महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष
01 ➔	वार्षिक सामान्य बैठक
03 ➔	प्रकाशन
03 ➔	कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें
04 ➔	प्रशिक्षण कार्यक्रम
05 ➔	राजभाषा समाचार
05 ➔	महानिदेशक के दौरे
05 ➔	गणमान्य व्यक्तियों का दौरा
05 ➔	विविध
06 ➔	मानव संसाधन समाचार

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष:

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

- तितलियों की एक प्रजाति के जीवन इतिहास का अध्ययन, उन्हें प्रयोगशाला में पिंजरों में पालन कर किया गया। प्रतिदर्श स्थलों से एकत्रित पादपों को, वृक्षों एवं शाकों के लिए हर्बेरियम के रूप में चिन्हित किया गया, इसके अतिरिक्त परियोजना "उत्तराखण्ड में विभिन्न वन प्रकारों / उप-प्रकारों से संबद्ध तितलियाँ" के अंतर्गत तितलियों के नमूने परिरक्षित तथा चिन्हित किए गए।
- बन ओक वृक्षों पर ग्रसित निष्पत्रकों की 23 प्रजातियों (कोलिओप्टेरा की 19 प्रजातियां तथा लेपीडोप्टेरा की 4 प्रजातियां) को एकत्रित कर पालन किया गया। बीज नाशी-कीट की एक प्रजाति तथा सिरेमबिसिड वेधक की दो प्रजातियों पर प्रयोगशाला में प्रयोग जारी थे। सभी कीट नमूनों को

फोटोग्राफी के अतिरिक्त, परिरक्षित, अंकित तथा कुल स्तर तक चिन्हित किया गया। पश्चिमी हिमालयी ओक वृक्षों के नाशी-कीटों का आंकड़ा-भंडार अद्यतनीकृत किया गया तथा परियोजना "पश्चिमी हिमालयी ओक के नाशी-कीट और उनका नियंत्रण" के अंतर्गत 15 और प्रजातियों को समाविष्ट किया गया।

- ऊष्मा के क्षय को कम करने हेतु शुष्कक आपाक क्विल्ट की अवधारणा अन्वेषित की गई। परिणाम सूचित करते हैं कि ग्लास वूल आपाक क्विल्ट ने सौर आपाक से ऊष्मा-क्षय को कम करने में सहायता की है।
- चकराता और धनौली वन प्रभागों में उगने वाली *मायरिका एस्कुलेंटा* की दो वृक्ष आबादियों को उनकी छाल में कुल फिनोलिक मात्रा (टी.पी.सी.) के लिए पहली बार लक्षण-वर्णित किया गया।
- ग्वार गम का क्वाटरनाइजेशन किया गया तथा नमूनों को उनके मूल्यांकन हेतु उद्योगों को जमा किया गया।
- आरकेडिया चाय बागान, प्रेमनगर, देहरादून में मर रहे *डलबर्जिया सिस्सू*, *मंगीफेरा इंडिका* तथा *ग्रीविलिया रोबस्टा* वृक्षों की स्वास्थ्य स्थिति पर रिपोर्ट, एक क्षेत्र सर्वेक्षण के बाद तैयार की गई।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

- संभावित जैव-नियंत्रण बैक्टीरियल पृथक बैसिलस वैलिजैनसिस की जांच तथा चयन *कैज्वारिना इक्वेस्टीफोलिया* के शिशिलन रोगाणु *ट्राइकोसपोरियम वेसिकुलोसम* के विरुद्ध की गई।

वार्षिक सामान्य बैठक:

भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की 24वीं आम वार्षिक बैठक 18 अप्रैल 2018 को डॉ. हर्ष वर्धन, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा अध्यक्ष भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित की गई। व.अ.सं., देहरादून द्वारा प्रकाशित "फॉरेस्ट फॉयर्स इन इंडिया" नामक हैंड बुक, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा विमोचित की गई। भा.वा.अ.शि.प. वार्षिक प्रतिवेदन 2016-17 को भी सोसाइटी ने बैठक में अंगीकृत किया गया।



भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की 24वीं वार्षिक सामान्य बैठक

- *कैज्वारिना इक्वेस्टीफोलिया* एक बहुउद्देशीय नाइट्रोजन नियतक, तेजी से उगने वाली सदाबहार वृक्ष प्रजाति है जिसे राज्य वन विभागों, वन विकास निगमों, कृषकों, वृक्ष उत्पादकों तथा काष्ठ आधारित उद्योगों द्वारा तमिलनाडु तथा भारत के अन्य भागों में उगाया जा रहा है। इन वृक्ष प्रजातियों की वृहद पैमाने पर मृत्युता में तना शिथिलन या छाल में फफोले बीमारी के रोगाणु *ट्राइकोस्पोरियम वेसिकुलोसम* (*सुब्रमनि एनोस्पोरा वेसिकुलोसा*) के कारण होती है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस भयानक रोगाणु के विरुद्ध संभावित जैव-नियंत्रण घटक को पृथक तथा चिन्हीत करना था। इस संदर्भ में पात्रे परिस्थितियों में, प्रभावी बैक्टीरियल पृथक *बैसिलस वैलिजैनसिस* की जैव नियंत्रण क्षमता का *ट्राइकोस्पोरियम वेसिक्यूलोसम* के विरुद्ध निर्धारण हेतु एक प्रयोग किया गया। कवक रोगाणु *टी. वैसिक्यूलोसम* को 2 से 3 वर्ष पुराने प्राकृतिक रूप से संक्रमित कैज्वारिना पौधों से पृथक किया गया तथा तमिलनाडु में कैज्वारिना की 2-3 वर्ष पुरानी स्वस्थ रोपणी की रायजोस्फेयर मृदा से प्रभावी बैक्टीरियल पृथक अलग किए गए तथा रोग-प्रतिरोधक अध्ययनों हेतु उनका प्रयोग किया गया। स्वस्थ कैज्वारिना रोपणी की राइजोस्फेयर मृदा से अलग किए गए बैक्टीरिया के 30 पृथकों की तना शिथिलन रोगाणु *टी. वैसिक्यूलोसम* के विरुद्ध जांच, पी.डी.ए. माध्यम पर द्वितीय संवर्ध विधि द्वारा की गई तथा कवक रोगाणु की अर्धव्यास वृद्धि पर प्रतिशत अवरोध (पी.आई.आर. जी.) दर्ज की गई। यह अवलोकन किया गया कि जांचे गए 30 बैक्टीरिया पृथकों में 9 ने 55% कवक रोगाणु की फुई वृद्धि में प्रतिरोध किया। इन 9 पृथकों में, पृथक (एस.के.एम. 01) ने कवक रोगाणु की फुई वृद्धि के दमन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिया और इसे आप्विक लक्षण-वर्णन के आधार पर *बैसिलस वैलेजेंसिस* के रूप में चिन्हित किया गया। यह निष्कर्ष ज्ञात हुआ कि संभावित बैक्टीरियल पृथक, *बी. वैलेजेंसिस* या इसके जैव-उत्पादों से जैव-नियंत्रण घटक के सूत्रणों का पौधशाला तथा क्षेत्र परिस्थितियों में परीक्षण किया जाएगा और यह परीक्षण कैज्वारिना उत्पादकों के लिए भयानक बीमारी पर नियंत्रण हेतु बहुत उपयोगी होगा।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- उपचारित अपशिष्ट जल सिंचाई के अंतर्गत मृदा आर्गेनिक कार्बन (एस.ओ.सी.) के तुलनात्मक अध्ययन में मृदा

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

- *स्केलोरोडर्मा पोलिराइजम*— एक माइकोराइजल कवक— को हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के कुछ हिस्सों में व्याप्त *पाइनस जिरार्डियाना* वनों में चिन्हीत/दर्ज किया गया। निष्कर्षों ने, संरोपित नवांकुरों में उन्नत वृद्धि प्रकट की, जिससे पौधशालाओं में नवांकुरों की प्रतिधारण अवधि कम करने में सहायता प्राप्त होती है तथा क्षेत्र में उनके आगामी उत्तरजीविता को भी बेहतर अवसर होता है। परिणाम राज्य वन विभागों के लिए वृहद-पैमाने पर नवांकुरों के उत्पादन तथा क्षेत्र में लंबे और स्वस्थ पौधों के रोपण हेतु लाभकारी हैं।

आर्गेनिक कार्बन में सितम्बर 2013 और जुलाई 2017 के दौरान 42.30% की वृद्धि हुई। वृक्ष प्रजातियों के कारण मृदा आर्गेनिक कार्बन में वृद्धि, *पी. सिनेरेरिया* के तहत मृदा में 9.02% से लेकर *ए.इंडिका* के तहत मृदा में 233.4% तक थी। मृदा में ट्यूब वैल जल के साथ 1/2 पैन वाष्पीकरण, 1/2 पैन वाष्पीकरण अपशिष्ट जल, 3/4 पैन वाष्पीकरण पर अपशिष्ट जल तथा 1 पैन वाष्पीकरण पर अपशिष्ट जल के साथ सिंचाई से मृदा आर्गेनिक कार्बन में 29.68%, 46.43%, 36.71% तथा 56.93% की क्रमशः वृद्धि हुई।

- भारत सबसे प्रमुख काष्ठ आयात करने वाला देश है तथा राजस्थान में जोधपुर हस्तशिल्प उद्योग अपने काष्ठ कार्य हेतु जाना जाता है। यह कार्बन विपणन दृष्टिकोण से हितकारी हो सकता है जब ऊर्जा दक्ष नवोन्मेष प्रौद्योगिकियां जिनसे अपशिष्ट में कमी, आपूर्ति गुणवत्ता में सुधार तथा सतत प्रबंधित व प्रमाणित वनों एवं वनों से बाहर के वृक्षों से काष्ठ की आपूर्ति, आदि समेकित हों। शुष्क क्षेत्र में हस्तशिल्प बनाने हेतु काष्ठ स्रोत के रूप में वैकल्पिक वृक्ष प्रजातियों का चिन्हीकरण, अप्रयुक्त/रोपणी में विकसित काष्ठ के उपयोग से लागत कम करने तथा सामान्य रासायनिक/परिरक्षक उपचारों से काष्ठ जीवनकाल में सुधार से दीर्घ अवधि के लिए काष्ठ उद्योग चिरस्थायी रह सकता है। शु.व.अ.सं., जोधपुर में अन्य अल्प ज्ञात काष्ठ प्रजातियों का पता लगाने के लिए *अजाडिरक्टा इंडिका* एवं *अकेशिया सेनेगल* पर वर्तमान में अध्ययन चल रहे हैं। अप्रैल 2016 में कॉपर सल्फेट, पोटेशियम डॉइक्रोमेट उपचारित *ए.इंडिका* काष्ठ तथा *प्रोसोपिस ज्यूलीप्लोरा* निष्कर्ष को कॉफी टेबल में परिवर्तित किया गया, जो अभी तक प्रतिरोधी है (अप्रैल 2018 में परीक्षित), यह हस्तशिल्प उद्योग में अपनी संभाव्यता का संकेत देता है। बाइपलैक्स टीसी द्वारा उपचारित नीम काष्ठ से प्रदर्शन पटल, बुक शैल्फ तथा छोटी अलमारी जैसे अन्य मूल्य वर्धित उत्पाद भी तैयार किए गए। प्रदर्शन पटल तैयार किए जाते हैं जिनमें रोहिड़ा काष्ठ प्रजातियों जैसी नक्काशी से इसकी उपयोज्यता में वृद्धि हो जाती है। नवंबर 2016 में नक्काशी (हस्त उपकरण) के साथ फोटोफ्रैम तथा *ए.सेनेगल* काष्ठ से नक्काशी (नवंबर 2017) के साथ पार्श्व मेज भी तैयार की गई। यह निष्कर्ष हस्तशिल्प उद्योग को वैकल्पिक काष्ठ के रूप में अधिक विकल्प प्रदान करते हैं।

प्रकाशन:

- उ.व.अ.सं., जबलपुर ने *उलबर्जिया लेटिफोलिआ* (गुलाब की लकड़ी, काला शीशम)—मध्य भारत का एक अतिसंवेदनशील वृक्ष, *बम्बूसा वलरिस* वर. सूक्ष्म काटों के माध्यम से हरित, *मेलिना अरबोरिआ* (लिन.) के नाशी-कीट एवं उनके नियंत्रण उपाय तथा उ.व.अ.सं. परिसर के पक्षियों पर 4 तकनीकी बुलेटिन प्रकाशित किए और घृतकुमारी, कालमेघ, कलिहारी, तिखुर, गुडमार, दीमक का प्रकोप एवं प्रबंधन, टी.एफ.आर.आई. ट्राईको कार्ड द्वारा सागौन के निष्पत्रक कीटों का जैविक नियंत्रण, वन रोपणियों में सफेद गिडार का प्रकोप एवं प्रबंधन, वानिकी परिचय केन्द्र एवं संग्रहालय एवं उ.व.अ.सं. वन व्याख्या केन्द्र तथा संग्रहालय पर 10 पैम्फ्लैट भी प्रकाशित किए।

कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें:

क्र.सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून			
1.	भा.वा.अ.शि.प. प्रौद्योगिकियों का वाणिज्यीकरण एवं प्रसार	02 मार्च 2018	—
2.	वन नीति अनुसंधान हेतु केन्द्र	24 अप्रैल 2018	15 कार्मिक



वन नीति अनुसंधान केन्द्र हेतु सलाहकार समिति बैठक

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

3.	आजीविका संसाधन के रूप में अकाष्ठ वन उत्पाद-अवसर एवं चुनौतियां	27 अप्रैल 2018	66 प्रतिभागी हितधारक
----	---	----------------	----------------------

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

4.	वन एवं जलवायु परिवर्तन पर पूर्व-सम्मेलन संगोष्ठी	11 अप्रैल 2018	व.आ.वृ.प्र.सं. के अधिकारी, वैज्ञानिक, कार्मिक एवं अनुसंधान अध्येता
----	--	----------------	--

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

5.	उत्तर भारत क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन (आर.आर.सी.)	20 अप्रैल 2018	एस.एफ.डी. गैर सरकारी संगठन, कृषक, वानिकी अनुसंधान संस्थान, विश्वविद्यालय अधिकारी, वैज्ञानिक एवं छात्र
----	---	----------------	---

6. हिमाचल प्रदेश राज्य हेतु रेड्ड+ तथा वन एवं जलवायु परिवर्तन नीति 26 अप्रैल 2018 3 सदस्यों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया

7. समृद्धि हेतु हिमाचल प्रदेश वन 26 अप्रैल 2018 8 प्रतिभागी

बांस एवं बेंत उच्च अनुसंधान केन्द्र, आइजॉल

8. राज्य रेड्ड+ कार्य योजना का निर्माण 25-26 तथा 28 अप्रैल 2018 -



बांस एवं बेंत उच्च अनुसंधान केन्द्र, आइजॉल में विशेषज्ञ परामर्श कार्यशाला

प्रशिक्षण:

क्र.सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून			
1.	तख्तों का परिरक्षण, पुलिंदे का डिजाइन तथा चीड़-पाइन की सूचिकाओं के पैनल	2-7 अप्रैल 2018	-
2.	वृक्षों, बांस एवं औषधीय पादपों का ऊतक संवर्धन	25-27 अप्रैल 2018	बी.एस.एस.कॉलेज, सुपौल बिहार के कार्मिक
काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलूरु			
3.	वन उपयोजन	3-4 तथा 6 अप्रैल 2018	33 प्रशिक्षु
वन उत्पादकता संस्थान, रांची			
4.	ई-अधिप्राप्ति प्रशिक्षण	9 अप्रैल 2018	निदेशक / अधिकारी / वैज्ञानिक / विज्ञान संबंधी कार्मिक / मंत्रालयी कार्मिक तथा अन्य

राजभाषा समाचार:

- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक दिनांक 27.04.2018 को डॉ. वी.पी. तिवारी, निदेशक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में हुई। बैठक के दौरान संस्थान द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में की गई प्रगति की समीक्षा की गई।

महानिदेशक का दौरा:

- डॉ. एस.सी. गैरोला, भा.व.से. महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने 11-12 अप्रैल 2018 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया तथा संस्थान में चल रही विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों की समीक्षा की।

गणमान्य का दौरा:

- श्री सी.के. मिश्रा., सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने 21 अप्रैल 2018 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का दौरा किया।

- श्री मेड मंगकु पसटिका, बाली के गवर्नर, इंडोनेशियाई गणतंत्र ने 23 अप्रैल 2018 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का दौरा किया।
- सी.एस.आई.आर.ओ. ऑस्ट्रेलियाई वृक्ष बीज केन्द्र के वैज्ञानिक, खोंगसक पिन्योपुसारेक तथा डॉ. डेविड बुश ने व. आ.वृ.प्र.सं. में 1997 से कार्यान्वित कैज्वारिना प्रजनन कार्यक्रम की समीक्षा तथा पुनर्अवलोकन हेतु 16 से 20 अप्रैल 2018 तक वृ.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का दौरा किया।
- श्री आर्टो रेटी, कार्यकारी उपाध्यक्ष, फोर्टम (फिनलैंड), सुश्री उल्ला रेहल, प्रमुख, सस्टेनेबिलिटी, फोर्टम (फिनलैंड), श्री अवदेश झा तथा श्री फैजुर रहमान, फोर्टम, भारत के पदाधिकारियों के एक दल ने श्री राजिब चंगकाटी, मुख्य प्रबंधक, बाँयो रिफाइनरी, नुमालिगढ़ रिफाइनरी लिमिटेड, गोलाघाट, असम के साथ 18 अप्रैल 2018 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट का दौरा किया।



श्री सी.के. मिश्रा, सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली ने वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का दौरा किया।

विविध:

संस्थान	विशेष दिन/विषयवस्तु	समयावधि
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	स्वच्छता ही सेवा	10 अप्रैल 2018
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	अंबेडकर जयंती	16 अप्रैल 2018
व.व.अ.सं., जोरहाट	पृथ्वी दिवस 2018	22 अप्रैल 2018
व.आ.वि.के., अगरतला		
व.व.अ.सं., जोरहाट	स्वच्छ भारत अभियान	25 अप्रैल 2018
उ.व.अ.सं., जबलपुर		5,13,19 और 26 अप्रैल 2018

मानव संसाधन समाचार:**नियुक्ति**

अधिकारी का नाम	कार्यभार ग्रहण करने की तिथि
श्री एस.डी. शर्मा, भा.व.से., उप महानिदेशक (अनुसंधान) भा.वा.अ.शि.प.	02.04.2018
डॉ. रत्नाकर जोहरी, भा.व.से., व.सं., व.जै.सं., हैदराबाद	24.04.2018

पदोन्नति

अधिकारी का नाम	पदोन्नति की तिथि
श्री सी. एम. नागराज मुर्ती, पुस्तकालयाध्यक्ष, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	13.04.2018

सेवानिवृत्त:

अधिकारी का नाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
श्री गजेन्द्र सिंह बिष्ट, निजी सचिव, व.अ.सं., देहरादून	30.04.2018
डॉ. रूपनारायण सेट्ट, वैज्ञानिक-डी, उ.व.अ.सं. जबलपुर	12.04.2018

संरक्षक:

डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक

संपादक मंडल:

श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष
डॉ. (श्रीमती) शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
श्री रमाकांत मिश्र, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), सदस्य

प्रत्याख्यान

- केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
- वानिकी समाचार में, प्रकाशित सामग्री, संपादक मंडल के विचारों की अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- यहां प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।